फूलगोभी एवं बंधागोभी (पातगोभी) की खेती

फूलगोभी

फूलगोभी भारतवर्ष की शीतकालीन सब्जियों में से एक प्रमुख सब्जी है जो अधिकतर उत्तरी भारत में उगाई जाती है। इसके फूल की सब्जी बनाई जाती है। फूल जब अधिक और बाजार भाव कम होता है, तो इसके फूल को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर सुखा कर भविष्य में प्रयोग के लिये रख लिया जाता है। इसके फूल का अचार भी बनाया जाता है। यह गोभी तथा फूलगोभी दोनों नामों से जाना जाता है।

भूमिः– फूलगोभी एवं बंधागोभी की खेती के लिए जैविक पदार्थों से भरपूर उपजाऊ हल्की दोमट मिट्टी काफी उपयुक्त होती है। अम्लीय से हल्की क्षारीय दोमट मिट्टी विशेष उपयोगी है।

उन्नत किस्में : ग्रीष्मकालीन : अर्ली कुँआरी, हाजीपुर एक्स्ट्रा अर्ली। (सिर्फ राँची के पठारी भागों के लिए)

अगेतीः– पंत गोभी-3, पटना अर्ली, पूसा कतकी, अर्ली कुँआरी, पूसा दीपाली, पूसा अर्ली सिन्थेटिक।

मध्यमः– पूसा कतकी, पूसा दीपाली, इम्प्रूव्ड जापानी, पंत सुभ्रा, IIHR-101, IIHR-105, इम्प्रूव्ड जापानीज, PG 26, हिसरि-1, पूसा हाइब्रिड-2, गिरिजा, माधुरी।

पिछेतीः– स्नोबॉल–16, पूसा स्नोबॉल-1, डानिया, माघी, पूसा सिन्थेटिक, पूसा शुभ्रा, दरिया, पूसा स्नोबाल के.-1।

फूलगोभी लगाने का समय

किस्में	बीज गिराने का समय	बिचड़े लगाने का समय
ग्रीष्मकालीन	फरवरी – मार्च	मार्च – अप्रैल
अगेती किस्म	जून – जुलाई	जुलाई – अगस्त
मध्यम किस्म	जुलाई – अगस्त	अगस्त – सितम्बर
पिछेती किस्म	सितम्बर – अक्टूबर	अक्टूबर – नवम्बर

बंधा गोभी (पात गोभी)

भारत में शरद ऋतु में उगाई जाने वाली सब्जियों में बन्द गोभी का प्रमुख स्थान है। प्राचीन समय में रोमन्स तथा ग्रीक्स द्वारा उगाई जाने वाली सब्जियों में सबसे पुरानी है।

बंधा गोभी की उन्नत किस्मेंः– अगेतीः गोल्डेन एकड़, प्राईड ऑफ इण्डिया, अर्ली ड्रमहेड, पूसा अगेती, पूसा मुक्ता, एक्सप्रेस, अर्ली वियाना।

पिछेतीः– लेट ड्रमहेड, पूसा ड्रमहेड, पूसा सम्बन्ध।

बंधा गोभी (पात गोभी) लगाने का समयः

किस्में	बीज गिराने का समय	बिचड़ा लगाने का समय
अगेती किस्में	अंत सितम्बर – अक्टूबर	अंत अक्टूबर – नवम्बर
पिछेती किस्में	अक्टूबर	नवम्बर

फूलगोभी एवं बंधा गोभी (पातगोभी) लगाने की विधि :– फूलगोभी एवं बंधागोभी लगाने के लिए बीज को पौधाशाला में छोटी–छोटी क्यारियों में बोकर बिचड़ा तैयार करते हैं तथा जब ये बिचड़े 4–5 सप्ताह के हो जाते हैं तो इन्हें तैयार किये गये खेतों में लगाते हैं।

बिचड़ा रोपने की दूरी (फूलोगोभी एवं बंद गोभी)

किस्में	कतार से कतार	पौधा से पौधा
ग्रीष्मकालीन किस्में	45 सें0मी0	30 सें0मी0
अगेती एवं मध्यम किस्में	45 सें0मी0	45 सें0मी0
पिछेती	50 सें0मी0	45 सें0मी0

खाद एवं उर्वरकों की मात्रा (प्रति एकड़) (फूलोगोभी एवं बंद गोभी)

गोबर खाद : 80 –100 क्विंटल
सिंगल सुपर फास्फेट : 200किलो
यूरिया :120 किलो
म्युरियेट ऑफ पोटाश : 40किलो

यूरिया का एक भाग, फास्फेट एवं पोटाश की पूरी मात्रा पौधा रोपाई या लगाते समय दें। यूरिया के शेष बचे दो भागों को दो बार में दें।

सिंचाईं : ग्रीष्मकाल में हर 5–6 दिनों पर सिंचाईं की आवश्यकता पड़ती है। अन्य सूखे दिनों में 10–12 दिनों पर सिंचाईं देना चाहिए।

पौधा संरक्षण : फूलगोभी एवं बंधा गोभी को 'डायमण्ड बैकमॉथ' नामक कीड़ा काफी नुकसान पहुँचाता है। ये कीड़े पत्तियों को खाकर उनमें छेद बना देते हैं तथा फसल को नुकसान पहुँचाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए निम्नलिखित उपाय करना चाहिए।

1. पौधशाला में इन्डोक्साकार्ब 15.8 एस.एल. को 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

फूलगोभी की दैहिकी विषमताएँ (Physiological Desorders)

(1) ब्राउनिंग (Browning) : यह बोरोन की कमी के कारण उत्पन्न होता है। इसमें तना खोखला हो जाता है तथा फूल भूरा पड़ जाता है। 10-15 किलो बोरेक्स प्रति हेक्टर के हिसाब से मिट्टी में मिलाने से इसकी रोकथाम की जा सकती है।

(2) ह्विपटेल (Whiptale) : यह विषमता मालीब्डेनम की कमी कारण उत्पन्न होता है। इसमें पत्ती पर्ण (Leaf blade) पूरी तरह विकसित नहीं हो पाता तथा सकरी पत्ती की संरचना (Strap like) बन जाती है। इस प्रकार फूल (Head) बाजार के लिये नहीं बन पाता। इसकी रोकथाम भूमि में चूने का प्रयोग करके जिससे भूमि में अम्लता कम हो जाती है और पी-एच बढ़कर 6.5 तक आ जाती है, की जा सकती है। सोडियम अथवा अमोनियम मालिब्डेट 1.5 किलोग्राम रसायन को प्रति हेक्टर भूमि में मिलाने से इसकी रोकथाम की जा सकती है।

(3) बटनिंग (Buttoning) – पौधों में छोटे-छोटे फूल (बटन जैसे) के बनने को ही बटनिंग (Buttoning) कहते हैं। यह नत्रजन की कमी तथा देर से रोपाई के कारण उत्पन्न होती है तथा साथ ही अधिक दिनों की पौध भी इसके लिये उत्तरदायी होती है। इस विषमता को समय से रोपाई करके तथा उचित मात्रा में खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करके इसकी रोकथाम की जा सकती है।

(4) ब्लाइन्डनेस (Blindness)– कभी-कभी ऐसा होता है कि पौधों की शीर्ष कलिका (Terminal bud) विकसित नहीं हो पाती या टूट जाती है अथवा कीड़ों के द्वारा नष्ट कर दी जाती है। इस प्रकार पौधा बिना फूल (Head) के वृद्धि करता है। इसी को ब्लाइन्डनेस (Blindness) कहते हैं। इसमें पत्तियाँ बड़ी, गहरे हरे रंग की तथा मोटी हो जाती है। यह तापक्रम के कम होने के कारण भी उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार के पौधो को खेत से निकाल देना चाहिये।

(5) रिसेनेस (Riceyness) – फूल (Curd) के ऊपर पुष्पकलिकाओं के शीघ्र विकास को रिसेनेस कहते हैं। (The precocious development of the flower buds of the curds is known as Riceyness). यह कटाई में देर होने से उत्पन्न होता है।

ब्लांनचिंग (Blanching) : फूलगोभी का पूर्ण एवं अच्छा फूल बिल्कुल दूधिया होना चाहिये। इसको प्राप्त करने के लिये फूल (Curd of head) को सूर्य की रोशनी से बचाना चाहिये। सर्वप्रथम जब फूल निकलते है तो वह अन्दर पत्तियों से ढंके रहते है, लेकिन बढ़ने पर वह खुल जाते है, अतः इस समय सूर्य की रोशनी से बचाने के लिये नीचे की पत्तियों को फूल के उपर करके इसके सिरों को एक दूसरे से बाँध देते हैं। यदि ऐसा करने में असुविधा हो तो नीचे की पत्तियों को तोड़कर इनसे फूल को ढंक देते है। इस क्रिया को ब्लांनचिंग (Blanching) कहते है। फूल को 5 दिन से अधिक नही ढंकना चाहिये।

उपज : 80–100 क्विंटल प्रति एकड़।

पौध संरक्षण : कीट

1) डायमंड बैकमॉथ : इसके छोटे, पतले, मटमैले हरे रंग के पिल्लू पौधे के प्रारंभिक अवस्था में ही पत्तियों को खुरचकर या काटकर खाता है और बाद में गोभी के अंदर रहकर हानि पहुँचाता है।

2) पत्ती छेदक : ये हरे रंग के होते हैं मुख्यतः पिल्लु पौधे के मध्यभाग को खाते हैं और जाला बनाकर रहते हैं।

रोकथाम : डायमंड बैकमॉथ तथा पत्ती छेदक से बचाव के लिए गोभी की 20 कतारों के बाद सरसों की एक कतार लगाएं तथा प्रकोप होने पर इन्डोक्साकार्ब 15.8 एस.एल. का 1.0 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

3) लाही (एफिड) तथा पत्ती फुदका : इनके शिशु एवं वयस्क पत्तियों पर चिपककर रस चूसते हैं जिससे पत्तियों पर छोटे-छोटे धब्बे दिखाई देते हैं। ये विषाणु भी फैलाते हैं।

रोकथाम : उन दोनों कीट की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोरपिड 17.8 एस.एल. 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतर में दो बार छिड़कें।

रोग एवं रोकथाम

1) आर्द्रगलन : पौधशाला में बिचड़ों का मरना, मिट्टी की सतह से कुछ ऊपर तक जलस्किट सड़न।

रोकथाम : बीजोपचार तथा पौधशाला में क्यारियों की 1 से 1.5 ग्राम कार्बेन्डाजिम 50% दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

2) श्याम विगलन या ब्लैकरॉट : पत्तियों का किनारा सूखना तथा शिराओं का काला पड़ना।

रोकथाम : टेबुकोनेजोल 50% + ट्राइफ्लॉक्सीट्रोबिन 25% डब्लू.जी. की 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर छड़काव करना चाहिए।

3) डाउनी मिल्ड्यु : पौधशाला में नवजात बिचड़ों या खेत में बड़े पौधे के पत्तियों की निचली सतह पर कपास की तरह सफेद मटमैले रंग के फफूंद का आक्रमण।

रोकथाम : डायथेन जेड.-78 का 2 से 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।